मैं बगियन से

सन्त-कवयित्री मीराबाई द्वारा रचित भजन

सन्त मीराबाई के भजन व काव्य उनके प्रियतम, भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति से ओतप्रोत हैं। एक बार जो उनके अन्दर भगवान श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम जाग्रत हो गया, उसके बाद से उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण अपने प्रभु की पूजा में समर्पित कर दिया। एक राजकुमारी की भूमिका को त्यागकर, वे एक भ्रमणशील साध्वी बन गईं ताकि हर पल श्रीकृष्ण के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने के लिए वे मुक्त रहें, जिन्हें वे 'हरि' कहकर सम्बोधित करतीं।

'मैं बगियन से' शीर्षक इस मनोरम भजन में, सन्त मीराबई उन सभी तरीक़ों का आनन्द लेती हैं, जिनसे वे अपने परमप्रिय हरि की पूजा करेंगी। भोर के समय हरि का गुणगान कर वे उन्हें जगाएँगी, ताज़े-सुगन्धित पुष्पों से उन्हें सजाएँगी, उन्हें भोग लगाएँगी और गरमी से दूर रखने के लिए उन्हें पंखा झलेंगी। अपनी भक्ति के आह्लाद द्वारा सन्त मीराबई हमें सिखाती हैं कि हम अपने आपको भगवान के साथ एकाकार समझें। वे श्रीहरि में इतना खो जाती हैं कि अपने रोम-रोम में प्रभु की ही अनुभूति करती हैं। उन्हें यह बोध है कि समस्त सृष्टि में हरि का वास है—उनके कण्ठ [आवाज़] में भी प्रभु विद्यमान हैं और उस श्वास में भी जो दीनों को पोषण व संरक्षण प्रदान करता है। सन्त-कवयित्री मीराबाई हमारे सामने यह आदर्श रखती हैं कि पराभक्ति द्वारा हम अपने अन्दर व सर्वत्र श्रीहरि की उपस्थिति की अनुभूति कर सकते हैं, उनके दर्शन पा सकते हैं।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।